International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 199-201

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 199-201
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-03-2017
Accepted: 13-04-2017

शक्ति पाण्डेय
शोध छात्रा म0 गां0 ग्रा0
विश्वविद्यालय सतना चित्रकूट

Correspondence
शक्ति पाण्डेय
शोध छात्रा म0 गां0 ग्रा0
विश्वविद्यालय सतना चित्रकूट

वाल्मीकि के साहित्य में महिला की आर्थिक स्थिति

शक्ति पाण्डेय

सारांश
यह शोध पत्र आदिकवि वाल्मीकि के आदिकाव्य रामायण में महिला की उच्च आर्थिक स्थिति का अमूल्य सिंहावलोकन है। मानव समाज की प्रगति गाथा प्राचीन काल से ही सम्पत्ति केन्द्रित रही है। इसे विश्व के प्रत्येक काल और भाषा के विद्वानों ने अपने अध्ययन की विषयवस्तु से कभी भी ओझल नहीं होने दिया। भारतीय संदर्भ के कवियों ने भी अपनी रचनाओं में इसे महत्वपूर्ण स्थान दिया है। भारतीय जीवन पद्धति में 'अर्थ' को ''पुरूषार्थ चतुष्ट्य'' में सम्मिलित कर भारतीय मनीषियों ने एक क्रांति का सूत्रपात कर दिया। अर्थ जैसे सर्वश्रेष्ठ निर्णायक तत्त्व के साथ नारी की स्थिति सदैव से अहम विवेचना बिन्दु रही है। इस लेख के माध्यम से तात्कालीन समाज में महिला की आर्थिक स्थिति प्रकाशित करने का प्रयत्न किया गया है।

संकेत शब्द: आदिकाव्य में महिला की आर्थिक स्थिति, वाल्मीकि रामायण में अर्थ एवं महिला, आदिकवि की रचना में महिला की स्थिति।

प्रस्तावना
वाल्मीकि द्वारा विरचित महाकाव्य रामायण प्राचीन भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है। संस्कृत साहित्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। रामायण के माध्यम से भारतीय समाज की ऐसी झलक प्रस्तुत होती है, जिसके माध्यम से प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का साक्षात् दर्शन होता है। रचनाकार ने सामाजिकता का सम्पूर्ण ताना–बाना अपनी रचना में बुन दिया है। आदिकवि ने मनुष्य की 'सम्पत्ति' सम्बन्धी अधिकार की विषद् चर्चा रामायण में प्रस्तुत की है। समाज में स्त्री, पुरूष, बच्चे पुत्र–पुत्रियां, दास, दासियों सभी वर्गो के सम्पत्ति संबंधी अधिकार का विस्तृत वर्णन वाल्मीकि ने अपने महाकाव्य में उद्धत किया है। रामायण काल में चल तथा अचल सभी सम्पत्तियों के उदाहरण विद्यमान हैं, और उनके निर्धारण के संबंध में भी चर्चा मिलती है। स्वर्ण, जवाहरात, हीरे, मोती, मुद्रायें, भूमि, गृह, पशुधन आदि चल, अचल सम्पत्तियों का व्यापक वर्णन वाल्मीकि रामायण में यत्र–यत्र परिलक्षित होता है। व्यक्ति अपनी अचल–चल सम्पत्ति का स्वामी था। राजतंत्र व्यवस्था होने के कारण राज्य की सम्पत्ति राजा के अधिकार में आती थीं, तथा वह प्रजा के पालन में इसका व्यय करता था। प्रत्येक नागरिक भी अपनी धन–सम्पदा का स्वामी होता था। प्रत्येक वर्ग की सम्पत्ति संबंधी अधिकार का विवरण प्राप्त होता है। शास्त्रों में 'अर्द्धनारीश्वर' का वर्णन मिलता है, जो नर नारी के पारस्परिक सम्बन्ध को मान्यता देता है। स्त्री के स्वामित्व के आभाव में गृह की कल्पना ही नहीं की जा सकती। गृह से समाज, समाज से देश और देश से विश्व का निर्माण होता है, अर्थात् स्त्री ही वह इकाई है जो सृष्टि की रचना करती है।

धर्मशास्त्रों की धारा समुद्र की धारा के समान ऊपर से एक विशाल धारा सदृश प्रतीत होती है, परन्तु भीतर अनेक छोटी–छोटी धाराओं का समागम होता है। 'नारी तु नारायणी' के जीवंत परम्परा पर आधारित वाल्मीकि रामायण में महिला को कानून दर्शन, धर्म ज्ञान, राजनीति सर्वत्र आसीन किया गया है। रामायण की रचना तात्कालीन समाज का प्रतिनिधित्त्व करती है। रामायण में महिला के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक सभी अधिकारों का समागम है।

महिला के आर्थिक अधिकारों को संकीर्णता के भंवर में न रखकर पूर्णता की ओर अग्रसर किया गया है। राजनीति, धर्म, कर्म, यज्ञ सर्वत्र स्त्री की सहभागिता सुनिश्चित की गई है। महिला के आर्थिक अधिकारों को मात्र भौतिक सम्पत्ति तक ही केन्द्रित नहीं किया गया है, अपितु सम्पत्ति की अवधारणा के आधार पर सम्पूर्ण मानवीय अधिकार और कर्त्तव्य उसमें समाहित है। आदिग्रंथ रामायण के समस्त काण्ड में महिला के आर्थिक अधिकारों का विस्तृत वर्णन किया गया है। नारी की सांस्कृतिक वर्चस्व, प्रभुत्त्व, प्रगतिशीलता, सहभागिता रामायण के केन्द्र बिन्दु हैं, जो स्वयंएव ही नारी की आर्थिक अधिकारिता सुनिश्चित करता है। महिला के आर्थिक अधिकारों को मजबूत करने के लिए उसे

व्यक्तिगत सम्पत्ति से परिपूर्ण होना आवश्यक है। इसी क्रम में विवाह उपरान्त एक नए परिवेश में प्रवेश करने पर महिला को अर्थ से सशक्त किया जाता है, जो उसके आर्थिक सशक्तिकरण का प्रतीक है। रामायण में इसका उल्लेख मिलता है, राजा जनक ने दिव्य, कम्बल, हांथी, घोड़े एवं उत्कृष्ठ अलंकार जानकी को विवाह में दिये–

अथराजाविदेहानांददौकन्याधनंबहु।
गवांषतसहस्त्राणि सहस्त्राणि बहूनिमिथलेश्वरः।।31।।
(बा0का0स0 63)

कंबलानांचमुख्यानांक्षौमान्यकोटयबराणिच।
हस्तयश्वरथपदांतदिव्यरूपंस्वलंकृतम्।।4।।
(बा0का0स0 63)

आदिग्रंथ रामायण में महिला के लिए एक जैसी आर्थिक संरचना प्रस्तुत की गई, जो न सिर्फ उसे एक सशक्त अर्थ में सम्पन्न महिला का स्वरूप देता है, अपितु निर्णयन की शक्ति भी प्रदान करता है। रामायण में एक स्थान पर वर्णित है, कि राम के विवाह का समाचार मिलते ही कौशल्या जी संदेशवाहक को बहुत सा धन, स्वर्ण, गायें इत्यादि सम्पत्ति प्रदान करती है–

त्वरिताः शीघ्रमागत्यकौसल्यायैन्यवेदयन्।
साहिरव्यचगारचैवरत्नानिविविधानिच्।।47।।
(अयो0कां0सं0 3)

इससे प्रकट होता है, कि स्त्री अपनी सम्पत्ति की स्वयं स्वामिनी होती थी किसी भी राष्ट्र के निर्माण में स्त्री की भूमिका की महत्ता से इंकार नहीं किया जा सकता है। यदि महिला की सहभागिता किसी कारण से निश्क्रिय होती है, तो राष्ट्र की प्रगति की कल्पना भी सम्भव नहीं है। 'योगेश चन्द्र जैन' इसका वर्णन करते हुए लिखते हैं– 'हमारे यहाँ शास्त्रों में कहा गया है कि– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवताः'' अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है, और हम जानते हैं कि देवता कार्य सिद्ध में सहायक है। इसलिए कहा जाता है, कि जिस क्षेत्र में नारी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेती है, वहाँ प्रगति की सम्भावनायें अत्यधिक बढ़ जाती है। रामायण में महिला को सर्वत्र सहभागिनी माना गया है। राष्ट्र की प्रगति में न सिर्फ अधिकारों का उपभोग करती है, अपितु कर्त्तव्य का निर्वहन करते हुए अपनी सहभागिता सुनिश्चित करती है। रामायण में एक स्थान पर राजा दशरथ रामचन्द्रजी को उनके राज्याभिषेक होने के अवसर पर आदेश देते हैं, कि तुम वधू के साथ नियमानुसार उपवासी रहकर पत्थर की चौकी पर कुश बिछाए शयन करना है–

तस्मात्त्वयाद्यप्रभृति निशयंनियमात्मना।
सह वध्वोपस्तव्यादर्भप्रस्तरशयिना।।3।। (अयो0कां0सं0–4)

रामायण के उपर्युक्त वर्णित श्लोकों से ज्ञात होता है, कि समाज और राष्ट्र के निर्माण में स्त्री की भूमिका सर्वमान्य थी। पुरूष और स्त्री दोनों का राष्ट्र निर्माण में बराबर का योगदान था। राष्ट्र जो 'अर्थ' का केन्द्र है वहाँ स्त्री की सहभागिता इन श्लोकों से स्पष्ट परिलक्षित होती है। इस प्रकार स्पष्ट है, कि रामायण में महिला के आर्थिक अधिकारों का वर्णन अनेक स्थान पर वर्णित है। सत्ता सम्पन्न आर्थिक अधिकारों से परिपूर्ण राजनैतिक अधिकारों का प्रयोग करती हुई महिला के चरित्र को रामायण में निखारा गया है। महिला सशक्त होकर अपने अधिकारों का उपभोग करती है। आर्थिक स्वतंत्रता के अंतर्गत सिर्फ धन अर्जित कराना ही नहीं समाहित है। अपितु उसका उपयोग या उपभोग आवश्यक है। 'ज्योत्सना मिलन' के अनुसार– स्त्री जितनी आजाद हुई है–कहना कि वह वैचारिक, आर्थिक, शारीरिक, राजनीतिक रूप से अधिक आत्मनिर्भर हुई या उस दिशा की ओर अग्रसर है। आर्थिक स्वतंत्रता सिर्फ पैसा कमाना न होकर उसे बरतना भी है। वाल्मीकि रामायण के प्रसंग में कैकेयी का कोपभवन में जाना दिव्य स्वर्ण जड़ित आभूषण का त्याग करना, तथा राजा दशरथ से अपने पुत्र भरत का राज्याभिषेक की माँग करना दो तथ्यों की ओर इंगित करता है। प्रथम महिला आभूषण आदि भौतिक सम्पत्ति से सशक्त थी, उसका उपभोग और उसे त्यागना उसकी स्वतंत्रता की ओर संकेत करता है। कैकेयी भौंहे कमान के समान तानकर भूमि पर लेटी रही और जितनी भाँति–भाँति की माला व वस्त्राभूषण थे सबको निकाल कर फेंक दिये। वह सब माला चित्र विचित्र मणि जड़ित स्वर्ण के हार व दिव्य भूषण इत्यादि पृथ्वी पर आ गिरे। वह सब गहने तारागणों से भरे हुए आकाश के समान पृथ्वी में शोभा प्रकाशित करने लगे–

संविवेषाबलाभूमौनिवेश्यभ्रुकुटिंमुखे।
ततश्श्रित्राणिमाल्यानिदिव्यान्यभरणानिच।।6।।
(अयो0कां0सर्ग 9)

अपविद्वानिककैकेय्यातानिभूमिंप्रयेदिरे
तयातान्यपविद्धनिमाल्यान्पभरणानिच ।। 6।।
(अयो0कां0सर्ग 9)

अशो भयंतवसुधानंक्षत्राणियथानभः।।8।।
(अयो0कां0सर्ग 9)

महिलाओं को पूरे विकास का केन्द्र बिन्दु माना गया है। प्रगति की दिशा में किसी भी सतत् परिवर्तन के लिए महिलाओं की भागीदारी अति आवश्ष्यक है। इसके लिए एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता उसकी आर्थिक स्वतंत्रता है, जिससे वह आत्मनिर्भर बन के न ही स्वयं अपितु दूसरों का भी पालन–पोषण कर सके। रामायण में एक स्थान पर ऐसा ही एक उद्धरण मिलता है, जहाँ पर कौशल्या न सिर्फ अपना ही अपितु दूसरों का भी भार वहन करती है। राम लक्ष्मण से वन जाने के प्रसंग में कहते हैं। कौशल्या माता ने अनुगत नेगचारियों को असंख्य ग्राम दान करके दे दिया है, वह हम जैसे हजारों मनुष्यों का पालन–पोषण करने में समर्थ हैं। ऐसी अवस्था में यह कहना कि माता कौशल्या अपना और माता सुमित्रा के पालन–पोषण के लिए असमर्थ होंगीं यह अत्यन्त अलीक वार्ता है। वह अपना और सुमित्रा जी का पालन–पोषण करने में समर्थ है–

कौशल्याबिभृयादार्यासहस्रंमद्विधानापि।
यस्याःसहसंग्रामणांसंप्राप्तमुपजीविनाम्।।22।।
(अयो0का0सं0 31)

तदात्मभरणेचैवममामात्रुस्तथैवच।
पर्याप्ताद्विधानांचभरणायायमनस्विनाम्।।23।।
(अयो0कां0सं0 31)

महिलाओं को उस स्थिति में सशक्त कहा जा सकता है जब वह भौतिक, मानवीय बौद्धिक (ज्ञान, सूचना, विचार आदि) व साथ ही वित्तीय संसाधनों पर अधिकतम भागीदारी प्राप्त कर सके तथा घरेलू, सामुदायिक एवं राष्ट्रीय जीवन के सन्दर्भ में अपनी सहभागिता रखे। रामायण में महिला की सहभागिता यत्र–यत्र देखने को मिलती है। राज्य पालन में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका समाहित है राजा दशरथ के इस वक्तव्य से कैकेयी तुम्हारी कामना

पूर्ण हुई अब वैधव्य धारण करते हुए यहाँ का राज्य पालन करती रहो, मैं क्षण भर भी राम के विरह में जीवित नहीं रह सकता–

सकामा। भव कैकेयि विधवाराज्यमावस।
नहितं पुरूषव्याघ्रंविनाजीवितुमुत्सहे ।।21।।
(अयो0कां0सं0 42)

यह स्पष्ट होता है, कि स्त्री को राज्य के पालन का अधिकार था। किसी भी अर्थ व्यवस्था का केन्द्र उसका राज्य होता है। यदि राज्य में महिला को शासन का अधिकार प्राप्त है, तो यह प्रमाण है उसकी आर्थिक स्थिति के सुदृढ़ होने का।
कौशल्या को राजमहिषी का पद प्राप्त था, स्त्री राज्य के सर्वोच्च पद पर आसीन थी। इसका अर्थ है, कि रामायण काल में स्त्री को राजनीतिक पद प्राप्त होता था, तथा वह सर्वोच्च पद पर आसीन होती थी। जो उसकी आर्थिक स्थिति की सुदृढ़ता की ओर संकेत है जिससे उसका सम्पत्ति में अधिकार स्पष्ट है। रामायण की सूची में अनेक ऐसे स्थान आये हैं जब संपत्ति के अधिकार का सृजन स्वयंमेव ही हुआ है, यदि सीता के जन्म की कथा पर विचार करें तो यह प्रकरण प्राप्त होता है कि सीता का जन्म की कथा मानवीय प्रक्रिया से नहीं हुआ बल्कि एक प्राकृतिक प्रकिया से हुआ और एक विशेष परिस्थिति वश उनका प्राकट्य होता है, जब सूखा से धन–धान्य आदि की हानि हो रही थी सभी आर्थिक प्रक्रियाएं सुझाव और निर्देशन में जनक ने खेतों में हल चलाया और इस प्रक्रिया के क्रियान्वयन के फलस्वरूप हल भूमि में एक घड़े से टकराया जिसके उपरान्त उस स्थल से घड़े में एक कन्या का प्राकट्न होता है। उस कन्या के उत्पन्न होते ही वसुधा हरी–भरी हो गयी, सूखे के प्रकोप से मुक्त हो गयी। धन–धान्य सम्पन्न विकास की रीठ है और अकूत धन धन–धान्य सम्पन्नता राष्ट्र के स्वरूप की परिचायकता सिद्ध करता है। जहां पर अतिरिक्त सम्पत्ति का अधिकार एक ऐसा प्रश्न दिखता है, जैसे सूर्य को दीपक दिखाना। वाल्मीकि रामायण यत्र–यत्र अपने मे नारी की विशद् आर्थिक भूमिका को समेटे अकूत धन सम्पदा की स्वामिनी के रूप में प्रस्तुत करता है। वाल्मीकि रामायण हिन्दू धर्म की शिरायें हैं, जिस पर समाज व्यवस्था स्तम्भित है स्त्री आदर्श का जो दैवीय चित्रण प्रस्तुत किया है, वह वंदनीय है। स्त्री अधिकारों को जो वर्णन रामायण में हुआ है, कुछ स्थानों पर अवश्य विपरीत स्थिति उत्पन्न करता है, किन्तु वास्तव में कर्तव्य सहनशीलता, मर्यादा, सम्पन्नता त्याग आदि की मूर्ति स्त्री के जिस चरित्र को प्रतिविम्बित किया गया है, वह समस्त अधिकारों को इच्छानुसार स्वीकार या अस्वीकार करती हुई, पुरूष से अनेक कदम आगे है।

संदर्भ ग्रन्थाः

1. रामायण, वाल्मीकि, राधाकृष्ण–धानुकाप्रकाशन संस्था–2012
2. वाल्मीकि रामायण, जानकीनाथ शर्मा, गीता प्रेस गोरखपुर, सं0 2012
3. वाल्मीकि रामायण समाज का मार्ग दर्शन, रजत जोशी, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, सं0–2012
4. नारीवादी राजनीतिक, निवेछिता मेमन, जिनी लोकनिता साधन आर्य हिन्दी, माध्यम कार्य–वयन निदेशालय दिल्ली, सं0–2001
5. ऋग्वेद–चौखम्भा, सुभारती, वाराणसी, 1998